10.53571/NJESR.2021.2.10.74-76

सांख्य दर्शन एंव सृष्टिक्रम

दर्शन शब्द उत्पत्ति

दर्शन शब्द की उत्पत्ति दृश् धातु से हुई है । दृश् धातु ल्युट् प्रत्यय करने पर दर्शन शब्द उत्पन्न होता है। भारतीय दर्शन सम्प्रदाय बहुत प्राचीन है । आदिकाल से ही मनुष्य के विभिन्न व्यवहारो को देखकर उसे समझने के लिए एक नई परम्परा का विकास हुआ। मनुष्य क्या-क्या कार्य कर रहा है ? क्यों कर रहा है ? इत्यादि । दर्शन का मानव जीवन के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है क्योंकि मनुष्य जीवन का कोई भी पक्ष दर्शन की परिधि से बाहर नहीं है । जब से यह सृष्टि प्रारम्भ हुई है तब से लेकर आज तक दर्शन शास्त्र का प्रभाव मनुष्य जीवन पर रहा है।

दर्शन शास्त्र एंव सांख्य दर्शन

आदिकाल से ही मनुष्य प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों को देखकर आश्चर्यचकित रहा है उसकी जिज्ञासा बनी रहती है कि यह प्रकृति क्या है ? सूरज, चाँद, हवा, तारे, पर्वत, नदियां, और वृक्ष आदि प्रकृति के सहायक उपादान क्या है ? मनुष्य कौन है ? अन्त कैसा होगा ? इत्यादि। ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने के लिए ही दर्शन सम्प्रदाय का आरम्भ हुआ । इस प्रकार अनेक दर्शन सम्प्रदाय भारतीय एंव पाश्चात्य जगत से बाहर निकलकर आए । जो वेदो एंव भारतीय परम्पराओं को मानते थे उन्हें भारतीय दर्शन सम्प्रदाय कहा गया । भारतीय दर्शन सम्प्रदाय मुख्य रूप से आस्तिक एंव नास्तिक दो भागों में बंटा हुआ है ।

सांख्य दर्शन इतिहास की दृष्टि से-

इस संसार में मनुष्य हमेशा दुःखो ग्रसित रहता है। उसे मनुष्य जीवन में दुःख ही दुःख अनुभव होते रहते है । इन दुःखो से छुटकारा पाने के लिए वह अपने जीवन में हमेशा प्रयासरत रहता है । इन प्रयासों में एक ज्ञान प्राप्ति भी है । यदि मनुष्य ज्ञानवान होगा तो वह समस्त दुःखो से निवृत्त हो जाएगा । ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र उपाय है प्रमाणों द्वारा पदार्थो का तात्विक ज्ञान । इस तात्विक ज्ञान द्वारा मनुष्य के एकान्तिक एंव आत्मन्तिक निवृत्ति आत्यन्तिक दुःख दूर हो सकते है ।

सांख्य दर्शन में दो तत्वों प्रकृति एवं पुरूष पर ज्यादा ध्यान दिया गया है। जब से संसार आरम्भ हुआ है तब से प्रकृति रही है अतरू सांख्य दर्शन ने ही पहले प्रकृति के महत्व को प्रतिपादित किया एवं प्रकृति एवं पुरूष के महत्व को बताया। सांख्य दर्शन अत्यधिक प्राचीन है सांख्य के नियम एवं बातें ऋग्वेद से ही प्राप्त होती हैं । ऋग्वेद में भी सांख्यानुसार जीव, प्रकृति पुरूष ईश आदि की सत्ता को वहां स्पष्टरूप से स्वीकार किया गया है ।

(1) द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समान विक्षं परिषस्वजाते ।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यनशनन्नन्यो अभिचाकशीति ।।

(ऋ 1/164/20)

इसी प्रकार नासदीय सुक्त, पुरूष सुक्त में भी उसी सृष्टि क्रम एवं तत्वो का विवेचन मिलता है। सम्पूर्ण उपनिषद् साहित्य मे यद्यपि सभी दर्शन शास्त्रो के बारे में वर्णन मिलता है किन्तु सभी में

सांख्य सिद्धान्तो का वर्णन नहीं मिलता । सबसे ज्यादा बृहदारण्याकोपनिषद में वर्णन किया गया है । छान्दोग्योपनिषद में सांख्य के 'सत्कार्यवाद' के दर्शन होते है ।

सांख्य के प्रमुख आचार्य -

सांख्य दर्शन के प्रवर्तक आचार्य महर्षि कपिल है। भागवतपुराण के अनुसार इन्हें विष्णु का पॉचवा अवतार माना गया है। इन्होंने ही सांख्य दर्शन की नींव रखी थी । इनके बाद इनके शिष्य आसुरी हुए । आसुरी को कपिल मुनि जी ने ही सांख्य की शिक्षा प्रदान की । आसुरी जी की कोई रचना या ग्रंथ का उल्लेख कहीं नहीं मिलता । इसी परम्परा को आचार्य पंचशिख ने आगे बढाया। ये आचार्य कपिल मुनि के प्रशिष्य थे । सांख्य में 'षष्टितन्त्र' का कर्ता इन्हे ही स्वीकार किया गया है। इसी प्रकार क्रमशः विन्ध्यवासी, जैगीषव्य, वार्षगण्य आदि अनेक आचार्य हुए जिन्हांेने सांख्य दर्शन की परम्परा को आगे बढाया ।

इसी परम्परा में अनिरूद्धवृति, सांख्यवृतिसार, लघु सांख्यवृति, एवं ईश्वर कृष्ण की सांख्य कारिका प्रसिद्ध टीका ग्रन्थ हुए है जिन्होने सांख्य दर्शन को और अधिक सुगम एंव सरल बना दिया। सांख्यकारिका में सांख्य के सभी नियमो की व्याख्या सरल रूप से की गई है ।

सांख्य दर्शन एंव सृष्टिक्रम

इस संसार में दुःख का अस्तित्व है, इसमें कोई सन्देह नहीं क्योंकि व्यक्ति का स्वयं का अनुभव इसमें प्रमाण है जैसे मै सुखी हूँ, दुःखी हूँ इत्यादि । हर प्राणी दुःख से बचना चाहता है इसलिए वह हर सम्भव प्रयास करता है इसमे उसे सफलता मिले यह आवश्यक नहीं है । इस दुःख से हमेशा के लिए छुटकारा पाने के लिए सांख्यशास्त्र का अध्ययन नितान्त अनिवार्य है। अतः जो व्यक्ति दुःखो से हमेशा छुटकारा पाना चाहता है उसे सांख्यदर्शनानुसार सृष्टिक्रम को जानना चाहिए। सांख्य दर्शनानुसार इस सृष्टि क्रम में तीन तत्व मुख्य है- व्यक्त, अव्यक्त और ज्ञ । अतः जो इन तीन तत्वों को जान लेगा उसे कभी भी दुःखो का अनुभव नहीं होगा । सांख्यानुसार ये तीन तत्व है तो सृष्टिक्रम में मुख्य भूमिका में रहते है ।

सांख्यानुसार दो तत्वों पुरूष एंव प्रकृति को सब तत्वो का मूल स्वीकार किया गया है । पुरूष को आत्मा भी स्वीकार किया गया है । पुरूष एंव प्रकृति मिलकर सृष्टि को चलाते है। सबसे पहले पुरूष के बारे में बताया गया है कि पुरूष 'ज्ञ' है 'मै हूँ' । इस प्रकार के अनुभव पुरूष की सत्ता को स्वीकार करते है। पुरूष में कोई विकार नहीं है। सांख्य में पुरूष को अनाश्रित, अलिब स्वतन्त्र निरवयवी विवेकी, अविषयी, साक्षी आदि विशेषताओं से युक्त कहा गया है । सांख्य कारिका में ईश्वर कृष्ण जी ने सृष्टिक्रम के विषय में कहा है:

प्रकृतेर्म हां सततोऽहंकारस्तमाद गणश्च षोडशकः ।

तस्मादपि षोडशकात्पञ्चम्यः पञ्चभूतानि ।।

सख्यांनुसार जगत का विकास प्रकृति से होता है जो कि सांख्य के द्वैतवाद में पुरूष के अतिरिक्त अन्य सत्ता है। प्रकृति से ही तीन गुण मिलकर इस सृष्टि क्रम को आगे बढाते है । सृष्टिक्रम में पुरूष एंव प्रकृति मिलकर चलते है तथा एक दूसरे की आवश्यकता को पूर्ण करते है । पुरूष चेतन है किन्तु निष्क्रिय है जबकि प्रकृति अचेतन किन्तु सक्रिय है। दोनो अपना उद्देश्य तभी पूर्ण कर

सकते है जब एक दूसरे की सहायता करें । सांख्यदर्शन में पुरूष एंव प्रकृति को लंगड़े एंव अंधे की तरह माना गया है । प्रकृति में विरुद्ध- परिणाम प्रारम्भ होने के बाद, सर्वप्रथम जो विकार उपस्थित होता है वह महत या बुद्वि है । बुद्वि से अगला विकार 'अंहकार' उत्पन्न होता है। 'अहंकार' का अर्थ है मैं या मेरा का भाव जो बन्धन का मूल कारण है । 'अहंकार' के तीन भेद है- सात्विक, राजसिक और तामसिक अंहकार। सात्विक अंहकार से एकादश इन्द्रियों का विकास होता है जिसमे पांच बाहर की ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां एक आन्तरिक ज्ञानेन्द्रि मन । तामसिक अंहकार से पंचतन्मात्राओं का विकास होता है । पांच तन्मात्राओ से ही पांच महाभूतो का विकास होता है। इस प्रकार कुल 25 तत्व जो कि सृष्टि में मुख्य होते है, का विकास होता है।

निष्कर्ष-

इस प्रकार उपर्युक्त सांख्यनुसार सृष्टि क्रम बनता है । सांख्य के नियम आज भी पूर्णतः प्रभावी है। विज्ञान की नई खोजो ने इस का प्रभाव बदल दिया है । दिशा विज्ञान की दृष्टि से यदि हम मुल्याकंन करें तो जो सृष्टिक्रम सांख्य में लिखा हुआ है वही क्रम अब भी लागु है । सांख्य के 25 तत्वों की एक रोचक बात यह भी है कि सांख्य का जो तत्व जिससे उत्पन्न होता है वही तत्त्व बाद में अपने कारण में मिल जाता है अर्थात् जो कार्य है वह कारण में समाहित हो जाता है। इसी प्रकार प्रकृति ही सब कार्यो की कर्ता है वही निरन्तर गतिशील रहती है । सब कार्य उसी से सम्पन्न होते है । सांख्यानुसार प्रकृति के अलावा प्रमुख पदार्थ है पुरूष, उसकी भी अहम् भूमिका है । अतः सृष्टि विज्ञान को समझने एंव प्रत्येक मनुष्य को समझाने में सांख्य सृष्टि क्रम सबसे महत्वपूर्ण है ।

संदर्भ ग्रन्थ

1 ऋग्वेद

2 गीता

3 सांख्य तत्त्व कौमुदी

4 सांख्य कारिका-पं0 ज्वाला प्रसाद गौड़

5 सांख्य दर्शन भाष्य-डॉ0 उदयवीर शास्त्री

शोध मार्गदर्शक
डॉ. सुभाष सैनी
एसोसिऐट प्रोफेसर
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय संस्कृत
विभाग, हनुमानगढ (राज.)

शोध छात्र
मोहन लाल
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय
संस्कृत विभाग, हनुमानगढ (राज.)
फोन: 9050094812
ई-मेल: pooniashastrimohan@gmail.com